प्रश्न : प्रेम क्या है?

जब प्रेम की बात आती है तो हम इस शब्द के प्रति बहोत पवित्रता से देखते है, हम इस शब्द को बहोत महत्व पूर्ण मानते है,इस प्रश्न के लिए हम दो चरण में बात करेंगे, पहेला की हम बात करेंगे प्रेम क्या **नहीं** है, अगर प्रेम शब्द को हम बहोत महत्वपूर्ण मानते है तो प्रेम को किसी एक के साथ जोड़ना बिलकुल भी उचित नहीं है, प्रेम किसी एक के साथ नहीं हो सकता, प्रेम अगर कीसी एक से हो तो प्रेम बहोत छोटा हो जाता है, बहोत सस्ता हो जाता है, प्रेम होता भी नहीं है, कई बार लोग कहते है प्रेम किया नहीं जाता प्रेम हो जाता है, अगर प्रेम हो जाता है तो इसका मतलब है जब प्रेम नहीं हुवा था तब प्रेम नहीं था, तो प्रेम अगर ऐसा है की कभी कभी हो जाता है, तो प्रेम कोई महत्व पूर्ण घटना नहीं है, ऐसे प्रेम का क्या महत्व जो कभी हो और कभी ना हो, प्रेम किसी कारण से नहीं है, अगर प्रेम के लिए कोई कारण है तो वह प्रेम नहीं है, क्योंकि जब कारण चला जाएगा तो प्रेम भी चला जाएगा, प्रेम हमें अंधा नहीं बनाता है, अगर किसी एक के लिए दूसरों को टाल दे, तब अंधापन है, जब सिर्फ़ कोई एक ही दिखाय दे और दूसरा होने पर भी ना दिखाय दे, तब अंधापन है, प्रेम बाहर नहीं है, अगर प्रेम बाहर है तो किसी वस्तु से है और किसी वस्तु से है तो वह वस्तु के कारण है, इसलिए प्रेम बाहर नहीं है, प्रेम मिल भी नहीं सकता, कई बार लोग कहते है मुजे किसिका प्रेम मिल जाए, प्रेम मिल जाए इसका मतलब है की प्रेम कोई दे सकता है, अगर ऐसा है तो कोई अगर दे रहा है तो उसके साथ देने वाली की मर्ज़ी भी जुड़ी होगी, आज मर्ज़ी है तो दे रहा है, हो सकता है कल मना कर दे, अगर ऐसा भी है तो लोग प्रेम का सोदा कर लेते, कहते की तुम मुजे प्रेम करो में तुम्हें प्रेम करूँगा, अगर ऐसा है की प्रेम का सोदा हो सकता है तो सोदा टूट भी सकता है, और सोदे में अक्सर ऐसा होता है की कोई 100 की नोट के सामने में 100 की नोट दे… तो भी लोग कहते है मेने तुम्हें नई नोट दी तुमने मुजे पुरानी दी, मेरी नोट नई है तुम्हारी पुरानी,

दूसरा चरण यह है की में क्यूँ **नहीं** बता सकता की प्रेम क्या है,

क्योंकि प्रेम कोई ऑब्जेक्ट नहीं है, जो में हाथ में लेके आपको दिखाऊँ की यह प्रेम है, अगर ऐसा होता तो प्रेम बाज़ार में बिकता, प्रेम की गोली आती, और जो वस्तु की क़ीमत लगायी जाए उसकी क्या क़ीमत, अगर प्रेम ख़रीदा जाए तो उसका क्या महत्व, तो लोग पहले टमाटर ख़रीदने की लाइन में खड़े होते, कहते की टमाटर ख़रीद ले, आज सस्ते है, क्या पता कल महेंगे हो जाए, प्रेम बाद में ख़रीद लेंगे,

इसलिए प्रेम क्या है यह जानने की बजाए प्रेम क्या **नहीं** है यह जानने की और बढ़े तो आप प्रेम की तरफ़ जाएँगे,

No one reach the destination riding false ride

आप अपना सवाल सीधा कर ले,

प्रश्न : तो क्या मीरा का कृष्ण से प्रेम नहीं था?

नहीं, मीरा को जब यह जानना हुवा की प्रेम क्या नहीं है, तब उन्हें पता चला की वो ख़ुद प्रेमपूर्ण है, तब फिर मीरा ना रही, वो प्रेमपूर्ण हो गयी, दूसरे लोगों के लिए मीरा, वो ख़ुद प्रेम, बादमे उस प्रेम धारा की थनगनाहट है जो समस्त के साथ मिलने की "जिन्होंने" प्रेम को बनाया है, उस थनगनाहट को दूसरे लोग भक्ति कहते है, जैसे नदी की समंदर के साथ मिलने की थनगनाहट को हम बहना कहते है, कहते है नदी बह रही है...ऐसा लगता है नदी नृत्य कर रही है, जैसे मीरा समस्त के साथ मिलने के लिए थनगन रही थी... तो लोगों ने कहा मीरा नाची, प्रेम धारा की समस्त के साथ मिलने के लिए जो थनगनाहट में मीरा ने जो किया उसे लोगों ने कहा की कृष्ण के प्रति प्रेम के कारण किया, पर जो ख़ुद प्रेमपूर्ण है उन्हें कारण की क्या ज़रूरत, आप पैसा लेके आलू ख़रीदने जाते है तो क्या दुकान पे जाकर आप ये कहेंगे मेरे पास पैसा आएगा तब में खरिदूँगी, तब फिर कोई कहेगा पैसा तो आपके पास है बस ख़रीदलो,

मीरा के लिए कोई कृष्ण नहीं था, उसके लिए " वह "समस्त अस्तित्व का स्त्रोत था, समस्त ब्रम्हाण्डो का सर्जनहार था, मीरा के लिए सब जगह "वही" था, वो जहाँ देखे वहा "वही", समस्त अस्तित्व के साथ मिलने की थनगनाहट में उसके शरीर द्वारा जो क्रियाएँ हुयी उसमें एक मूर्ति को समस्त के रूप में देखना बस था, उसके लिए फिर सब जगह "वह" समस्त है, उसके लिए अनाम है, कोई कृष्ण नहीं है, मीरा का कृष्ण की मूर्ति को समस्त दिखना एक ढंग था, जैसे बुद्ध का एक ढंग था समाधि, बुद्ध का समाधि में बेठना और समस्त हो जाना एक ढंग था।

....

Aasthit